Prokerala

Jupiter Transit Report

KAREN LAURET

February 17, 2002, 10:00 AM

Kottayam

ॐ अंगि-रसाय विद्महे
दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्ररचोदयात् ॥

जन्म विवरण

नाम	KAREN LAURET
जन्म तिथि	17 February, 2002
जन्म का समय	10:00 am
जन्म तारीख	रविवार
दिन/रात	दिन
जन्म स्थान	Kottayam
अक्षांश एवं देशांतर	9.93988, 76.2602
समय क्षेत्र सुधार	स्टैण्डर्ड टाइम(+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	पुरुष

वर्ष 2002, 17 फरवरी, रविवार को उत्तरायण के समय, सूर्योदय के पश्चात 10:00 AM बजे 8 घटी (नाझिका) और 1 विघटी (विनाझिका) पर, पंचमी तिथि, बव करण, शुभ नित्य योग, रेवती नक्षत्र के चौथे पद में, मेष लग्न, कुम्भ सूर्य राशि और मीन चन्द्र राशि में इस लड़का का जन्म हुआ।

नक्षत्र	चंद्र राशि	सूर्य राशि
रेवती	मीन	कुम्भ
पद : 4	पाइसीज़	एक्वेरियस

पंचांग का विवरण

नीचे दी गई तालिका KAREN LAURET के जन्म समय के पंचांग विवरण को दर्शाती है।

तिथि (चंद्र दिवस)	पंचमी
नक्षत्र	रेवती (4/4)
नक्षत्र प्रभु	बुध
योग	शुभ
करण	बव
चंद्र राशि	मीन
चंद्र राशि स्वामी	गुरू
सूर्य राशि	कुम्भ
सूर्य राशि स्वामी	शनि
राशि चक्र चिन्ह (पश्चिमी प्रणाली)	एक्वेरियस
आयन	उत्तरायण
ऋतु	शिशिर
हिंदू माह (अमांत)	माघ
सूर्योदय	06:47 am
सूर्यास्त	06:30 pm
चंद्रोदय	09:59 am
चंद्रास्त	10:27 pm

नक्षत्र, राशि, और अन्य विवरण	
लग्न राशि	मेष
नवमांश	मेष
योग कारक	Nil
आत्म कारक	चंद्र
अमात्य कारक	मंगल
लग्न आरूढ़	कुम्भ
धन आरूढ़	मीन
चंद्र-अवस्था	10/12
चन्द्र-वेला	30/36
चन्द्र-क्रिया	49/60
दग्ध राशि	मिथुन और कन्या
देवता	पुश्वव
गण	देव गण
चिह्न	मछली
पशु चिन्ह	हाथी
नाड़ी	कफ
रंग	भूरा
सर्वोत्तम दिशा	पूर्व
शब्दांश	De, Do, Cha, Chi
जन्म रत्न	मरकत (पन्ना)
योनि	स्त्री
शत्रु	Lion
वृक्ष	महुआ
भूत	आकाश
गोत्र	क्रतु

आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में KAREN LAURET के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

लग्न चार्ट

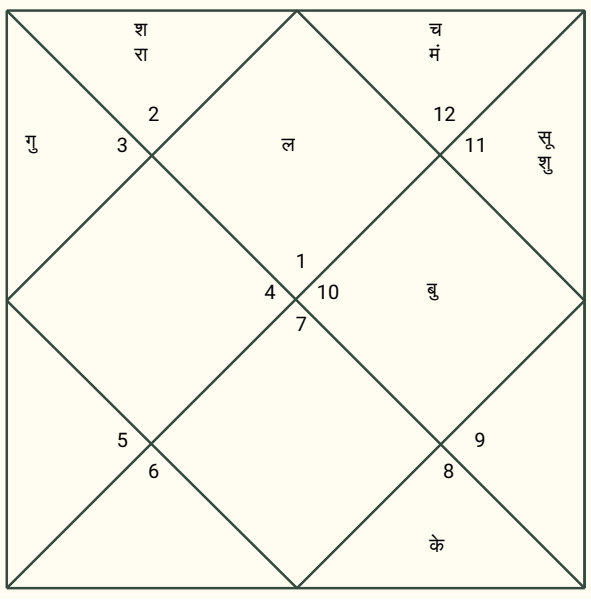

नवमांश चार्ट

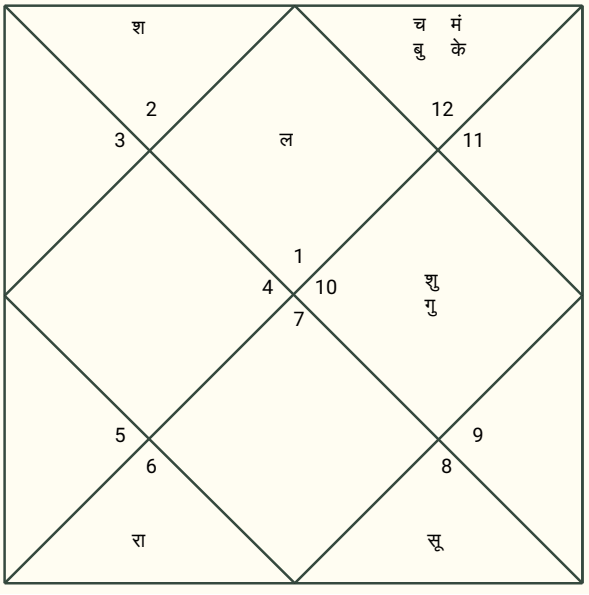

चंद्र चार्ट

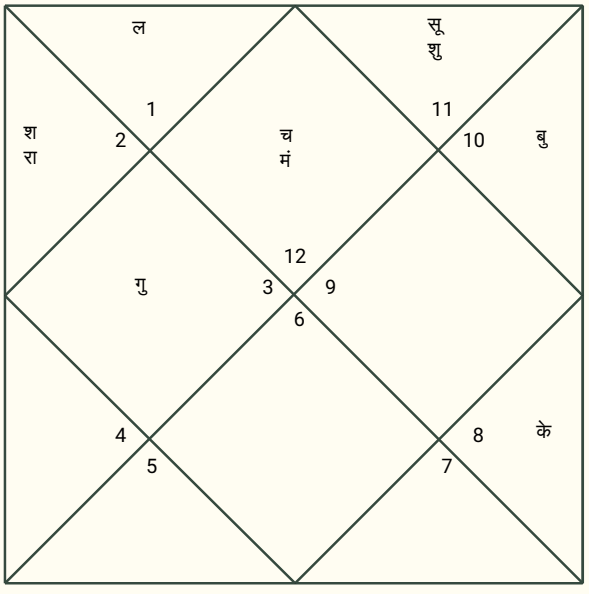

वेदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 53‘ 12“

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयण देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	304° 26‘ 34“	4° 26‘ 34“	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	357° 24‘ 58“	27° 24‘ 58“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
बुध	278° 21‘ 42“	8° 21‘ 42“	मकर	शनि	शतभिषा	रवि
शुक्र	312° 32‘ 31“	12° 32‘ 31“	कुम्भ	शनि	उत्तराषाढ़ा	राहु
मंगल	357° 14‘ 50“	27° 14‘ 50“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
गुरू ℞	71° 59‘ 31“	11° 59‘ 31“	मिथुन	बुध	चित्रा	राहु
शनि	44° 13‘ 23“	14° 13‘ 23“	वृषभ	शुक्र	अश्विनी	चंद्र
लग्न	0° 18‘ 23“	0° 18‘ 23“	मेष	मंगल	अनुराधा	केतु
राहु ℞	59° 58‘ 18“	29° 58‘ 18“	वृषभ	शुक्र	भरणी	मंगल
केतु ℞	239° 58‘ 18“	29° 58‘ 18“	वृश्चिक	मंगल	पुष्य	बुध

℞ वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
सूर्य	304° 26‘ 34“	4° 26‘ 34“	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	357° 24‘ 58“	27° 24‘ 58“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
बुध	278° 21‘ 42“	8° 21‘ 42“	कैप्रिकॉर्न	शनि	शतभिषा	सूर्य
शुक्र	312° 32‘ 31“	12° 32‘ 31“	एक्वेरियस	शनि	उत्तराषाढ़ा	राहु
मंगल	357° 14‘ 50“	27° 14‘ 50“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
गुरू ℞	71° 59‘ 31“	11° 59‘ 31“	जेमिनी	बुध	चित्रा	राहु
शनि	44° 13‘ 23“	14° 13‘ 23“	टॉरस	शुक्र	अश्विनी	चंद्र
लग्न	0° 18‘ 23“	0° 18‘ 23“	एरीज़	मंगल	अनुराधा	केतु
राहु ℞	59° 58‘ 18“	29° 58‘ 18“	टॉरस	शुक्र	भरणी	मंगल
केतु ℞	239° 58‘ 18“	29° 58‘ 18“	स्कॉर्पियो	मंगल	पुष्य	बुध

℞ वक्री को दर्शाता है

विंशोत्तरी दशा

वैदिक ज्योतिष के अनुसार विंसोत्तरी दशा सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च दशा है। 120 वर्षों की अवधि में 9 दशाएँ विभाजित हैं। प्रत्येक दशा का एक शासक ग्रह होता है और किसी व्यक्ति का जीवन सीधे तौर पर उस विशेष दशा को नियंत्रित करने वाले उसके शासक ग्रह की प्रकृति से प्रभावित होता है। पहली महादशा किसी दिए गए नक्षत्र में जन्म के चंद्रमा की स्थिति से निर्धारित होती है।

जन्म समय से शेष बचा हुआ दशा काल : 3 years, 3 months and 18 days

नीचे विभिन्न महादशाओं का प्रारंभ समय और समाप्ति समय दिया गया है

प्रभु	शुरुआत	समापन
बुध	04-Jun, 1988	04-Jun, 2005
केतु	04-Jun, 2005	04-Jun, 2012
शुक्र	04-Jun, 2012	04-Jun, 2032
सूर्य	04-Jun, 2032	04-Jun, 2038
चंद्र	04-Jun, 2038	04-Jun, 2048
मंगल	04-Jun, 2048	04-Jun, 2055
राहु	04-Jun, 2055	04-Jun, 2073
गुरू	04-Jun, 2073	04-Jun, 2089
शनि	04-Jun, 2089	05-Jun, 2108

भिन्नाष्टकवर्ग

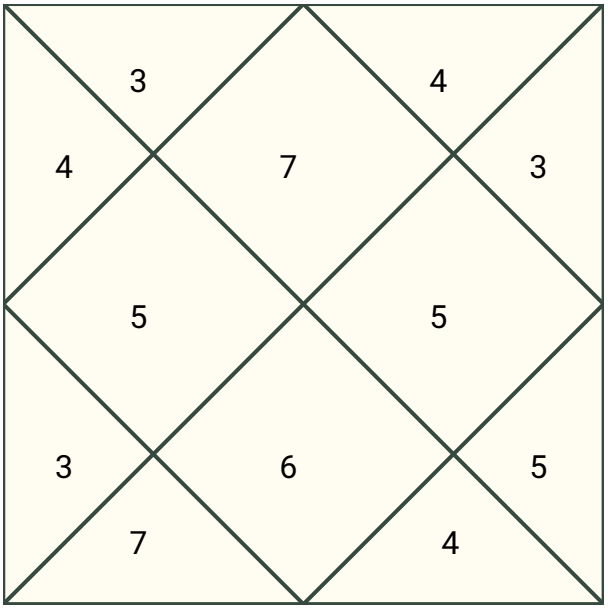

अंक: 56

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	लग्न	प्राप्तांक
मेष	1	1	1	0	1	1	1	1	7
वृषभ	1	0	1	0	0	0	0	1	10
मिथुन	0	0	1	1	1	1	0	0	14
कर्क	0	1	0	1	0	1	1	1	19
सिंह	1	0	0	0	0	1	0	1	22
कन्या	1	1	1	0	1	1	1	1	29
तुला	1	0	1	1	1	0	1	1	35
वृश्चिक	1	1	1	1	0	0	0	0	39
धनुष	1	0	0	1	1	1	0	1	44
मकर	0	1	1	0	1	1	0	1	49
कुम्भ	1	0	1	0	0	0	0	1	52
मीन	1	0	0	1	1	1	0	0	56
प्राप्तांक	9	5	8	6	7	8	4	9	56

सर्वाष्टकवर्ग चार्ट

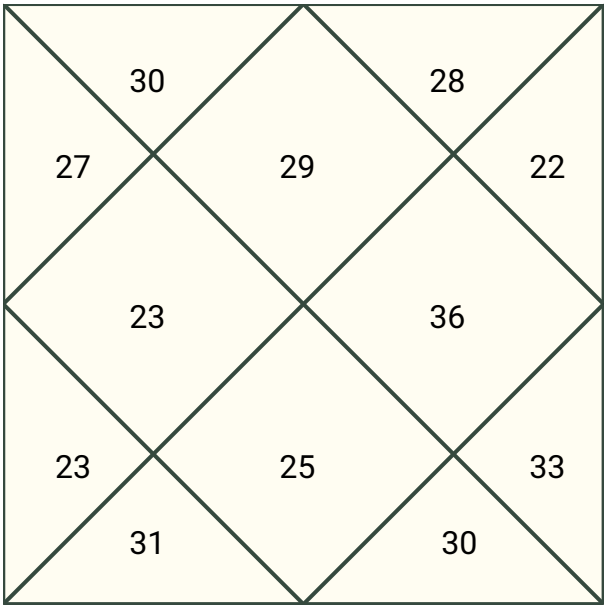

अंक: 337

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	प्राप्तांक
मेष	2	5	5	4	4	7	2	29
वृषभ	4	5	5	5	4	3	4	30
मिथुन	4	3	6	4	4	4	2	27
कर्क	2	4	2	4	2	5	4	23
सिंह	4	5	2	3	2	3	4	23
कन्या	4	5	4	4	3	7	4	31
तुला	4	3	5	3	1	6	3	25
वृश्चिक	5	4	5	5	4	4	3	30
धनुष	5	5	6	4	4	5	4	33
मकर	5	5	7	5	5	5	4	36
कुम्भ	4	1	3	6	2	3	3	22
मीन	5	4	4	5	4	4	2	28
कुल	48	49	54	52	39	56	39	337

आपकी जन्म कुंडली में गुरू का विश्लेषण

गुरु या देवगुरु के रूप में जाने जाने वाला बृहस्पति, ज्योतिष में ज्ञान, शिक्षा और विवेक के संबंध में एक पवित्र स्थान रखता है। नवग्रहों में, गुरु को सबसे शुभ ग्रह माना जाता है। 'बृहत् पराशर होरा शास्त्र' के अनुसार, गुरु का दिव्य समकक्ष देवराज इंद्र हैं, देवताओं के राजा। गुरु को पुरुष प्रभाव का माना जाता है, जो पंचभूतों में वायु तत्व पर आधारित है। गुरु को ब्राह्मणिक गुणों के प्रतीक के रूप में माना जाता है, जो शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक है। सात्विक गुण के साथ संरेखित, बृहस्पति को उसके पुण्य स्वभाव की विशेषता से जाना जाता है।

गुरु के संबंधों में, सूर्य, चंद्रमा और मंगल मित्रता का रिश्ता दर्शाते है। इसके विपरीत, बुध और शुक्र को गुरु के शत्रु माना जाता है, जबकि शनि के प्रति तटस्थ दृष्टिकोण बनाए रखते हैं।

गुरु धनु और मीन राशियों पर शासन करते हैं, जबकि गुरु का सर्वोच्च बल कर्क राशि में उच्च स्थिति में होता है, लेकिन मकर में नीच अवस्था में कमजोर होता है। किसी व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली में एक मजबूत बृहस्पति उन्हें ज्ञान, बुद्धि और शिक्षा के क्षेत्रों में योग्यता प्राप्त करने की प्रवृत्ति देता है। इसके विपरीत, कमजोर गुरु से ये क्षेत्रों में प्रयासों में बाधा हो सकती है, जिससे उनकी ज्ञान से संबंधित क्षमताओं में उनकी सफलता पर प्रभाव पड़ सकता है।

आपकी जन्म कुंडली में, गुरू लग्न से 3rd भाव में, चन्द्रमा से 4th भाव में,, दुर्बल में, में, मिथुन में, चित्रा नक्षत्र के दूसरे पद में, और गुरू क्रमशः ग्यारहवे भाव में शुक्र को देख रहा है

बृहस्पति तीसरे भाव में

यदि बृहस्पति तीसरे स्थान में है तो जातक स्वयं को कई बार तुच्छ अनुभव करेगा और अपने वित्त को लेकर सावधान होगा। इसके अलावा, ऐसे जातकों के भाई काफ़ी प्रभावशाली होते हैं और कभी-कभी कुछ ग़लतियां कर सकते हैं जिसके कारण वे ग़लत आदतों के आदि भी हो सकते हैं। जबकि ऐसे लोग अमीर न दिखते हों लेकिन इनके पास छुपी हुई संपदा होती है साथ ही ये पैसों की बचत में कुशल होते हैं। वे संभवत: चार या पांच भाई-बहनों वाले एक परिवार में प्रेमपूर्वक रहते हैं। संभावित चुनौतियों के बावजूद उनका पारिवारिक रिश्ता मज़बूत रहता है और उन्हें सरकारी अधिकारियों से मान्यता भी प्राप्त हो सकती है। साथ ही, उनकी कला और साहित्य में काफ़ी रुचि होती है जो सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनके रुझान को व्यक्त करती है। भले ही उन्हें मुश्किल का सामना करना पड़े, लेकिन बृहस्पति का इस स्थान पर होना उन्हें मुश्किलों से आगे बढ़ने में सशक्त करता है और उनके समुदाय में उन्हें सम्मान प्राप्त होता है, यह उनके साहसिक और उपकारी प्रवृत्ति के साथ उनकी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

गुरू गोचर

२०२५ में, बृहस्पति दो राशियों से गोचर करेगा: मिथुन राशि और कर्क राशि। इन गोचरों के लिए तालिका, अवधि और भविष्यवाणियाँ नीचे दी गई हैं।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गोचर चार्ट

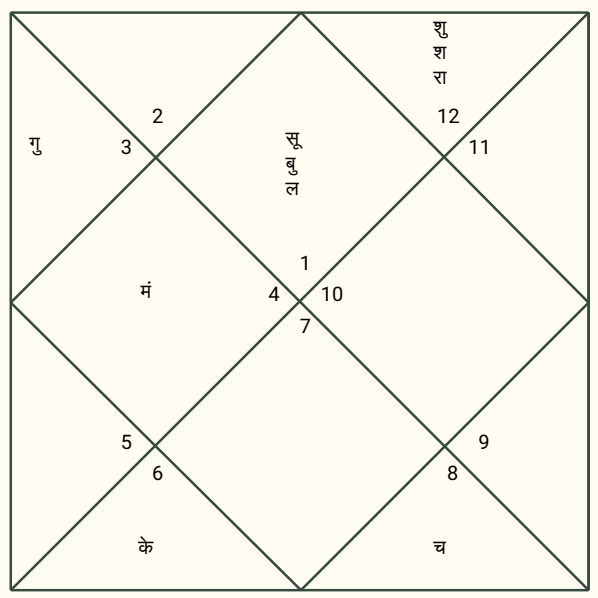

गुरू May 14, 2025 से October 18, 2025 तक मिथुन राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि मीन से गिने जाने वाले चौथे भाव से होकर गुजरेगा। गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

गुरू मिथुन राशि में 5 months and 3 days तक रहेगा गुरू वर्तमान राशि में वक्री नहीं होगा।

गुरू का अगला गोचर October 18, 2025 को होगा जब गुरू कर्क राशि में चला जाएगा।

गुरू का 4 भाव से गोचर प्रतिकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु पर सबसे खराब स्थिति में पहुंचता है। चूँकि गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, इसलिए नकारात्मक प्रभाव थोड़े बढ़ जाएँगे ।

बृहस्पति कर्क राशि में।

गोचर चार्ट

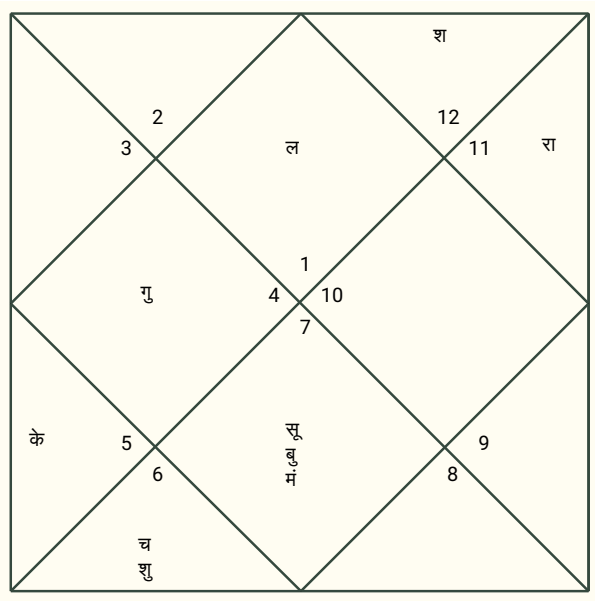

गुरू October 18, 2025 से December 05, 2025 तक कर्क राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि मीन से गिने जाने वाले पांचवे भाव से होकर गुजरेगा। गुरू आपके लिए स्वर्ण मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

गुरू कर्क राशि में 1 month and 16 days तक रहेगा और एक बार वक्री होगा। वक्री होना November 11, 2025 से शुरू होगा और March 11, 2026 को कर्क राशि में समाप्त होगा, जो 3 months and 27 days तक चलेगा।

गुरू का अगला गोचर December 05, 2025 को होगा जब गुरू मिथुन राशि में चला जाएगा।

गुरू का 5 भाव से गोचर अनुकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु के आसपास अपने चरम प्रभाव पर पहुँचता है। गुरू आपके लिए स्वर्ण मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी।

गोचर फल

बृहस्पति, अन्य ग्रहों से अलग, 7वें भाव के अलावा 5वें और 9वें भाव पर भी अपना विशेष प्रभाव डालता है। नीचे लग्न और जन्म राशि के आधार पर बृहस्पति के गोचर की भविष्यवाणियाँ दी गई हैं।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

जब गुरु तृतीय भाव, अर्थात पराक्रम भाव से गोचर करता है, तो मेष लग्न के जातकों के लिए यह परिवर्तन का महत्वपूर्ण समय होगा। मिथुन राशि का, बुध द्वारा शासित, यह भाव साहस तथा भाई-बहनों से मिलने वाले सहयोग में वृद्धि करता है। ऐसे जातकों को भाई-बहनों से लाभ प्राप्त हो सकता है, किन्तु गुरु के बारहवें भाव अर्थात व्यय भाव के स्वामी, व्ययेश होने के कारण, ये लाभ कुछ हद तक कम हो सकते हैं। इसके बावजूद, जातक अपने खर्चों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करते हैं तथा विदेशी स्रोतों से सहायता प्राप्त कर सकते हैं। चूंकि गुरु व्ययेश अर्थात बारहवें भाव का स्वामी तथा भाग्येश नवम भाव का स्वामी दोनों है, इसलिए लाभ, रोजगार, प्रयास व भाई-बहनों के साथ सम्बन्धों को लेकर मिले-जुले परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

पंचम दृष्टि: चूंकि गुरु सप्तम भाव अर्थात तुला राशि के स्त्री भाव पर दृष्टि डाल रहा है, जो गुरु के शत्रु ग्रह शुक्र द्वारा शासित है, अतः जातक को रोजगार व वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित मामलों में महत्वपूर्ण किन्तु मध्यम सफलता प्राप्त हो सकती है।

सातवीं दृष्टि: गुरु की नवम भाव अर्थात धर्म भाव, जोकि धनु राशि का मूल भाव है, पर दृष्टि के कारण जातक की भाग्य व किस्मत में वृद्धि हो सकती है। उन्हें भाग्यशाली व्यक्तियों के रूप में माना जाएगा तथा वे धार्मिक मूल्यों तथा नैतिक सिद्धांतों का पालन करेंगे।

नौवीं दृष्टि: गुरु की शनि द्वारा शासित कुंभ राशि के ग्यारहवे भाव अर्थात लाभ भाव पर दृष्टि यह इंगित करती है कि जातक की आय में वृद्धि हो सकती है, हालांकि उसे प्रारंभिक रूप से कुछ संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है।

बृहस्पति आपकी जन्म राशि से चौथे भाव में गोचर कर रहा है

चंद्र राशि से चौथे स्थान में बृहस्पति ग्रह के स्थानांतरण के दौरान, विशेष रूप से पारिवारिक और घरेलू परिवेश में व्यक्ति को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इस पारिवारिक तनाव के कारण मानसिक शांति भंग हो सकती है जिससे व्यक्ति भावनात्मक उथल-पुथल और मानसिक खींचतान का अनुभव कर सकता है। जातक के इस योग में दुर्घटनाओं का जोखिम भी अधिक है, विशेष रूप से वाहनों के द्वारा जो तनाव के बढ़ने का भी एक कारण है। ऐसी ग्रह दशा वाले लोग अपने आप को कई मामलों में ग़लत तरीके से दोषी ठहराया पाएंगे जिससे वे और अधिक असहज महसूस करेंगे। मानसिक अस्थिरता और शारीरिक थकावट के रहते हुए लड़ाई-झगड़ों और शंकाओं से अस्थाई भटकाव हो सकते हैं लेकिन आर्थिक नुकसान होने के भी योग बनते है। ऐसे समय में व्यापार में असफ़लता हाथ लग सकती है, ज़मीन का नुकसान हो सकता है और रिश्तेदारों व संबंधियों से दूरियां भी बढ़ सकती हैं। इसके अलावा, जातक को ग़लत आरोपों के कारण कानूनी समस्याएं हो सकती हैं, अपमान सहना पड़ सकता है और जानवरों के हमले से चोट लगने की भी संभावना है। व्यक्ति के अपने भाई-बहनों और रिश्तेदारों के साथ संबंधों में कड़वाहट आ सकती है और परिजनों में से किसी की मृत्यु के कारण भावनात्मक पीड़ा बढ़ सकती है। कार्यक्षेत्र में व्यावसायिक असफ़लताएं जैसे पद से अवनति, झूठे आरोप, और आसपास के लोगों से छल युक्त संबंध व्यक्ति को हताश कर सकते हैं जिससे प्रमाद और गतिरोध की भावना घर कर सकती है।

राशि के माध्यम से ग्रहों का पारगमन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह के परिणाम देता है, जो व्यक्ति की जन्म राशि (जन्म चंद्र राशि) के सापेक्ष उसके घर की स्थिति पर निर्भर करता है, जहां पारगमन होता है। कभी-कभी, ये सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जन्म राशि के सापेक्ष विशेष घरों में अन्य पारगमन ग्रहों की स्थिति से समाप्त हो जाते हैं। जब किसी पारगमन ग्रह के सकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं, और इसी तरह, जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहा जाता है।

नकारात्मक गुरू के चौथे भाव से गोचर के प्रत्याशित बुध, शुक्र, और मंगल प्रभाव आपके जन्म राशि मीन के सापेक्ष पांचवे भाव से एक साथ गोचर करने के कारण निष्प्रभावी हो जाते हैं, जो गुरू के लिए 'वेध स्थान' के रूप में कार्य करता है। प्रतिकूल परिणामों के इस निरस्तीकरण को 'विप्रीत वेध' कहा जाता है। बुध, शुक्र, और मंगल के पारगमन की विशिष्ट अवधि जिसके परिणामस्वरूप अलाभकारी प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, नीचे दिए गए हैं:

கிரகங்கள்	शुरुआत	समापन	अवधि
बुध	Jun 22, 2025	Aug 30, 2025	2 months and 7 days
शुक्र	Aug 21, 2025	Sep 15, 2025	24 days
मंगल	May 14, 2025	Jun 07, 2025	23 days

ऊपर ग्रहों के लिए वेध काल का उल्लेख किया गया है, जिसमें सूर्य और चंद्र शामिल नहीं हैं। सूर्य और चंद्रमा के लिए वेध काल रिपोर्ट के अंत में दिए गए हैं।.

बृहस्पति कर्क राशि में।

मेष लग्न के जातकों को गुरु का यह गोचर जन्म कुंडली के चतुर्थ भाव, जिसे सुख भाव भी कहा जाता है, में होगा, तथा यह जातक के जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव लाएगा। कर्क राशि में उच्च का होने के कारण, जो कि चंद्रमा की राशि है तथा चन्द्रमा, गुरु का मित्र ग्रह है, यह गोचर जातक को माता से अपार शक्ति प्रदान करेगा तथा संपत्ति से सम्बन्धित मामलों में सफलता दिलाएगा। जातक को सौभाग्य की प्राप्ति होगी तथा वह धर्म के मार्ग पर अग्रसर होगा, जिससे उसे सभी प्रकार के घरेलू सुख व वैभव प्राप्त होंगे।

पाँचवीं दृष्टि: गुरु की दृष्टि अष्टम भाव पर अर्थात आयु भाव, जो मंगल के अधीन है और वृश्चिक राशि का स्वामी है पर होगी। यह गोचर व्यक्ति को दीर्घायु प्रदान करता है व वंशानुगत संपत्ति से लाभ प्रदान करता है। यह गोचर न केवल दैनिक जीवन में शांति और स्थिरता लाएगा, बल्कि जातक के गूढ़ ज्ञान व प्राचीन शास्त्रों में पकड़ को भी मजबूत करेगा।

सातवीं दृष्टि: गुरु की दृष्टि दसवें भाव पर, जिसे कर्म भाव भी कहा जाता है पर होगी, दशम भाव शनि द्वारा शासित होता है एवं शनि, गुरु का शत्रु ग्रह माना जाता है, अतः जातक के पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा उनके करियर में कुछ चुनौतियाँ आ सकती हैं। जातक को सरकारी मामलों से संबंधित कार्यों और व्यावसायिक विस्तार करते समय अत्यधिक सतर्क रहने की सलाह दी जाती है।

नौवीं दृष्टि: गुरु की दृष्टि बारहवें भाव, जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है पर होगी, जो स्वयं गुरु की स्वराशि मीन से सम्बधित है। इससे जातक के खर्चों में वृद्धि हो सकती है। सकारात्मक पक्ष यह है कि इस स्थिति से विदेश सम्बन्ध मजबूत होंगे, आध्यात्मिक उन्नति होगी, आंतरिक शांति प्राप्त होगी, व संतुष्टि की अनुभूति होगी।

बृहस्पति, जो एक राशि से होकर गुजरने में लगभग एक वर्ष का समय लेता है, पूरे वर्ष में लगातार कुंडली में एक जैसा प्रभाव नहीं डालता है। एक राशि में नक्षत्रों के ढाई भाग होते हैं, और बृहस्पति विभिन्न अंतरालों पर इन नक्षत्रों से होकर गुजरता है, जिससे बृहस्पति के पारगमन के प्रभावों में उतार-चढ़ाव होता है। इसके अलावा, अष्टकवर्ग अवधारणा के अनुसार, प्रत्येक राशि को शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और लग्न के क्रम में सात ग्रहों और लग्न के अनुरूप आठ कक्षों में विभाजित किया गया है। इसके अतिरिक्त, प्रतिगामी प्रभाव, गोचर वेध या विपरीत वेध और नक्षत्र वेध भी पारगमन ग्रह द्वारा प्रदान किए गए परिणामों को प्रभावित करने में भूमिका निभाते हैं। बृहस्पति के पारगमन के संबंध में उपरोक्त जानकारी के लिए नीचे भविष्यवाणियां और संबंधित तिथियां दी गई हैं:

बृहस्पति आपकी जन्म राशि से पांचवें भाव में गोचर कर रहा है

बृहस्पति के चंद्र राशि से पांचवे स्थान में स्थानांतरण के दौरान, जातकों को ढेर सारी मंगल कामनाएं और अवसर प्राप्त होने की संभावना है। इस अवधि में भौतिक सुख जैसे वाहन, सोना और संपत्ति के साथ पुत्रों के आगमन के भी योग बनते हैं। आपको निकट भविष्य में आर्थिक लाभ और लाभकारी कार्य होने के योग हैं जो वित्तीय स्थिरता और समृद्धि लाएंगे। वैवाहिक और पारिवारिक रिश्ते मज़बूत होंगे जिससे परिवार में सौहार्द और खुशहाली आएगी। साथ ही आपको इस दौरान सम्मान, दर्जा और संतान प्राप्त होने की भी संभावना है। जातकों द्वारा किए गए प्रयास वांछित फल के रूप में सामने आएंगे जिनके फलस्वरूप धन-संपत्ति में तो वृद्धि होगी ही साथ ही पारिवारिक संबंधों से भी संतोष का अनुभव होगा। प्रभावशाली व्यक्तित्त्व वाले लोगों के साथ संपर्क भी लाभकारी सिद्ध होंगे जो समाज में जातक की स्थिति को बढ़ाएंगे और विकास के अवसर भी प्रदान करेंगे। जातक के बौद्धिक स्तर में भी वृद्धि होगी जिससे विद्वत्तापूर्ण क्षेत्रों एवं परोपकारी गतिविधियों में रुझान बढ़ेगा। सरकारी नौकरी, अधीनस्थों से सहयोग और पुत्र का जन्म जैसी घटनाओं के कारण समाज में जातक के दर्जे और स्तर में वृद्धि होगी। मित्रों से सहयोग, अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ अनुकूल संबंध सभी कार्यों में समृद्धि और उन्नति के लिए योगदान देंगे जिससे बाहुल्य और पूर्णता की एक अवधि का अनुभव होगा।

राशि के माध्यम से ग्रहों का पारगमन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह के परिणाम देता है, जो व्यक्ति की जन्म राशि (जन्म चंद्र राशि) के सापेक्ष उसके घर की स्थिति पर निर्भर करता है, जहां पारगमन होता है। कभी-कभी, ये सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जन्म राशि के सापेक्ष विशेष घरों में अन्य पारगमन ग्रहों की स्थिति से समाप्त हो जाते हैं। जब किसी पारगमन ग्रह के सकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं, और इसी तरह, जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहा जाता है।

इस गोचर के दौरान, बृहस्पति पर किसी अन्य ग्रह से गोचर वेध या विपरीत वेध का प्रभाव नहीं पड़ता है। हालांकि, चंद्रमा इस अवधि के दौरान गोचर वेध का कारण बनता है, जिसकी संबंधित तिथियाँ रिपोर्ट के अंत में दी गई हैं।

गुरू के विभिन्न कक्षों से पारगमन

प्रत्येक ग्रह एक विशिष्ट अवधि के लिए एक राशि से होकर गुजरता है। चिन्ह को आठ बराबर खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें काक्ष्य कहा जाता है। प्रत्येक कक्ष एक विशिष्ट ग्रह के आधिपत्य में शासित होता है, इस क्रम में शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और अंत में लग्न क्रम से शासन करता है।

गुरू के भिन्नाष्टकवर्ग में, मिथुन राशि के 4 अंक हैं। ये 4 अंक बुध, शुक्र, मंगल, और गुरू द्वारा योगदान किए गए हैं।

चूंकि बृहस्पति 2025 में कर्क राशि में गोचर के दौरान केवल पहली कक्ष्या, अर्थात शनि की कक्ष्या से ही गोचर करेगा, इसलिए बृहस्पति के कर्क राशि गोचर के लिए प्रदान की गई कक्ष्या भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ केवल शनि की कक्ष्या पर आधारित हैं।

मिथुन: जब गुरू बुध, शुक्र, मंगल, और गुरू द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मिथुन राशि में 4th भाव से संबंधित अधिकतम परिणाम प्रकट करता है।

कर्क: जब बृहस्पति शनि की कक्ष्या से गोचर करता है, तो वह कर्क राशि में 5th भाव से संबंधित फल अधिकतम मात्रा में प्रदान करता है।

अष्टकवर्ग में बिंदुओं के कक्ष से होने वाले बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातक अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की उम्मीद कर सकते हैं। जातक अपनी संपत्ति, खुशहाली और दाम्पत्य जीवन में सुधार अनुभव कर सकते हैं। इस परिवर्तन से उनके सामाजिक स्तर में भी वृद्धि हो सकती है और उन्हें सम्मान, उत्साह और संपूर्ण समृद्धि प्राप्त हो सकती है। इस अवधि में जातक पाएंगे कि वे विलासितापूर्ण वस्त्र और सोना ग्रहण कर रहे हैं। ये लोग अपने मानसिक स्वास्थ्य में भी उल्लेखनीय सुधार अनुभव करेंगे जिससे उन्हें आंतरिक शांति और संतोष प्राप्त होगा। साथ ही, अपने विरोधियों और समस्याओं पर विजय पाने के लिए यह अवधि बहुत अनुकूल है। साथ ही, इतने अनुकूल कक्ष से बृहस्पति का स्थानांतरण जीवन में वैभव, खुशहाली और उन्नति की अवधि है।

मिथुन: जब गुरू सूर्य, चंद्र, शनि, और लग्न द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मिथुन राशि में 4th भाव से संबंधित परिणामों का केवल एक हिस्सा ही सामने लाता है।

कर्क: चूंकि शनि की कक्ष्या से बृहस्पति के गोचर के दौरान एक बिंदु उपस्थित है, इसलिए इस अवधि में किसी प्रतिकूल प्रभाव की अपेक्षा नहीं है।

बिंदु से रहित कक्ष से होने वाले बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातक स्वयं को विपत्तियों में घिरा पा सकते हैं जहां वे संपदा और विवेक में ह्रास का अनुभव करेंगे। विशेष रूप से वित्तीय मामलों से संबंधित यह ह्रास मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। साथ ही, वाणी के कारण लड़ाई और अपमान हो सकते हैं जिससे जातक की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उन्हें अपने विरोधियों से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जातक फ़िज़ूलखर्च में भी संलग्न हो सकते हैं जिससे उनकी वित्तीय समस्याएं गंभीर हो सकती हैं। अपनी परिस्थितियों को सुधारने के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बावजूद वे पाएंगे कि उनके प्रयास निष्फल हो रहे हैं जिसके कारण वे शर्मिंदगी और गलत आरोपों का शिकार बनेंगे।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गुरू के भिन्नाष्टकवर्ग में, मिथुन राशि के 4 अंक हैं। ये 4 अंक बुध, शुक्र, मंगल, और गुरू द्वारा योगदान किए गए हैं।

चार बिंदुओं वाली राशि से होने वाले स्थानांतरण के दौरान, एक जातक को निरंतरता की अवधि का अनुभव होगा। इस दौरान, कोई विशेष लाभ या हानि नहीं होगी और चीज़ें सामान्य गति से चलेंगी। ऐसी ग्रह दशा एक संतुलित अस्तित्व का संकेत होती है जो कि सौभाग्य में किसी भी प्रकार के परिवर्तन से रहित है। हालांकि, यहां यह भी ध्यान देना ज़रूरी है कि इस दौरान दूसरों से तिरस्कार और अपमान अनुभव हो सकता है जो कि जीवन में आलोचनाओं और लघु चुनौतियों का एक चरण हो सकता है। इसके बावजूद, यह सम्पूर्ण अवधि एक औसत स्थितियों वाली अवधि है जो कि किसी भी परिस्थिति की अति से रहित है जहां स्थिरता और नियम बना रहेगा।

पहले काक्ष्य

चूंकि, कक्षा बिंदु रहित है, इसलिए शनि की कक्षा में बृहस्पति का गोचर चुनौतीपूर्ण हो सकता है. जिससे, इस समय में, व्यक्ति को उसकी लालची प्रवृत्ति अथवा अतिशय लाभ कमाने की इच्छा के कारण धन का नुकसान हो सकता और असफलता आदि का सामना करना पड़ सकता है. फलस्वरूप, व्यक्ति में क्षोभ और असंतोष की भावना प्रभावी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, नकारात्मक कार्यों अथवा अनैतिक आचरण समस्याओं को बढ़ा सकते हैं और व्यक्ति की स्थिति और भी ख़राब हो सकती है। इसके साथ-साथ कर्मचारियों या नौकरों के व्यवहार से नुकसान हो सकता है। इसलिए, संबंधों में सामंजस्य बनाए रखने एवं प्रभावी तरीके से उसे व्यवस्थित करने पर ध्यान देना होगा. इस समय पर यह जरुरी है कि जातक अपने कार्यों का आत्मावलोकन करता रहे, अपने व्यवहार में संतुलन बनाए रखे और इमानदारी के साथ कोई भी निर्णय लेवें।

शनि के पहले कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
14-May-2025	01-Jun-2025

दूसरे काक्ष्य

चूंकि इस दशा में बृहस्पति के कक्ष से बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान बिंदुओं की उपस्थिति है, जातकों को उनके घरेलू जीवन में प्रसन्नता और संतोष में वृद्धि का अनुभव होगा। उनके परिजनों के साथ संबंधों में सुधार हो सकते हैं, साथ ही उन्हें व्यक्तिगत जीवन में पूर्णता का अनुभव कराने वाला एक शांतिपूर्ण और सौहार्द से भरा पारिवारिक वातावरण प्राप्त होगा। विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करने की भूख के साथ एक जातक धर्म के सिद्धांतों के अनुपालन और उन्हें समझने में वास्तविक रुचि प्रदर्शित करेगा। साथ ही, जातक को अनुकूल नीतियों, वित्तीय सहायता या अन्य प्रकार के सहयोग के रूप में सरकार से लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इससे उनकी संपत्ति और वित्तीय स्थिरता में बढ़त होगी। इसके अलावा, जातक की ख्याति और सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। इन लोगों को शिक्षकों और गुरुओं से आशीर्वाद भी प्राप्त हों सकते हैं।

गुरू के दूसरे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
01-Jun-2025	17-Jun-2025

तीसरे काक्ष्य

बिंदुओं की उपस्थिति में मंगल के कक्ष से गुरु का गोचर करना संबंधित जातकों के लिए महत्त्वपूर्ण सकारात्मक फल प्रदान करने वाला होता है. जातकों को कई तरह के शुभ लाभों का फल अपने कठिन परिश्रम और दोस्तों या सामान सोच रखने वाले लोगों के साथ सहयोग प्राप्त होने से मिल सकता है. इन शुभ फलों में जातकों को अपने व्यक्तिगत प्रयास से करियर में पदोन्नति मिलने या आगे बढ़ने की संभावना बन सकती है जिसे जातक द्वारा किए जाने वाले समर्पण का फल प्राप्त होना कह सकते हैं. जातकों का उत्साह मजबूत होने से लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रेरणा मिल सकती है. इसके अतिरिक्त, नैतिक एवं इमानदारी भरे जीवन जीने की प्रतिबद्धता यह दर्शाता है कि जातकों में सद्गुणों वाले कार्यों एवं नैतिक आचरण के प्रति झुकाव बढ़ सकता है. सकारात्मक अवसरों के बढ़ने एवं सुफल प्राप्त होने की संभावना इमानदारी को प्राथमिकता देने की वजह से बढ सकती है.

मंगल के तीसरे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
17-Jun-2025	04-Jul-2025

चौथे काक्ष्य

बिंदुओं के अभाव में सूर्य के कक्ष से बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान जातकों को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे लोगों को सरकारी कार्रवाइयों के कारण कुछ वित्तीय नुकसान का भी अनुभव हो सकता है जो काफ़ी चुनौतीपूर्ण होगा। इसके साथ ही, सरकारी कर्मचारियों से विरोध होने पर तनाव भी बढ़ सकता है।

मित्रों के साथ संबंधों में भी तनाव आ सकते हैं जिससे रिश्तों में कड़वाहट आ सकती है। ऐसे में वित्तीय स्थितियां चुनौतियों को और बढ़ा सकती हैं जिससे पैसे से जुड़ी समस्याएं गंभीर हो सकती हैं।

स्वास्थ्य समस्याएं जैसे पाचन संबंधी रोग के अलावा हृदय और सिर से जुड़ी बीमारियां भी हो सकती हैं जिससे असुविधा हो सकती है। इसके अलावा, बच्चे से दूरी और गर्भपात की भावनात्मक जटिलताओं के कारण वेदनाओं का बोझ बढ़ सकता है।

सूर्य के चौथे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
04-Jul-2025	20-Jul-2025

पांचवे काक्ष्य

शुक्र के कक्ष में बृहस्पति की यात्रा के दौरान जातकों को बिंदुओं की उपस्थिति के कारण सकारात्मक परिणाम भी मिल सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को अनुभवी शिक्षकों से बहुमूल्य शिक्षा और सहायता प्राप्त हो सकती है जिससे विशेष रूप से कानून के संबंध में उनके ज्ञान में विस्तार हो सकता है। जातकों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे इस समय में सच्चे आचरण करें जिससे उन्हें गुणी महिलाओं से लाभ के साथ कई अन्य फ़ायदे भी होंगे।

इसके अलावा, इस अवधि में परामर्श और सुझाव का योग भी प्रबल है जिससे जातक को उचित निर्णय लेने में मदद मिलेगी। ऐसा भी हो सकता है कि इस समय एक बच्चे के जन्म जैसी जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटें। अति कुशल और शिक्षित लोगों के साथ भी संपर्क बन सकते हैं जिससे जातक को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा।

ग्रह की इस यात्रा के दौरान वाहन जैसी परिसंपत्तियों को अर्जित करने का भी योग है जिससे आवागमन में सुगमता होगी।

शुक्र के पांचवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
20-Jul-2025	07-Aug-2025

छटे काक्ष्य

जैसे ही बृहस्पति बुध की कक्षा से गुज़रेगा, जातक लाभकारी प्रभावों के बारे में पहले से सोच सकते हैं क्योंकि बिंदु उपस्थित हैं। अनेक प्रकार की जानकारी और विज्ञान संबंधी पूछताछ में इस समय जातक दिलचस्पी और जोश दिखाएंगे। अक्सर अपने आस-पास के वातावरण को समझने का उत्साह धन और सम्पूर्ण खुशहाली में वृद्धि करता है। इसके अतिरिक्त सीखने और ज्ञान अर्जित करने में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है, जिससे व्यक्तिगत विकास होता है। इसके अलावा इस अवधि में लोगों में शारीरिक सुख के लिए बहुत अधिक आदर उनके सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है। इसके अलावा जो लोग अलग-अलग क्षेत्रों में व्यापक जानकारी रखते हैं वे अपनी विशेष जानकारी का प्रदर्शन करके सलाह और मार्गदर्शन देने का अधिकार पा सकते हैं। जो आदर शिक्षकों और गुरुओं से मिलने वाला आदर उनकी रुचि से संबंधित क्षेत्रों में सीखने और योगदान देने के लिए उनके समर्पण को पहले से ज़्यादा विधिमान्य बनाता है।

बुध के छटे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
07-Aug-2025	25-Aug-2025
07-Feb-2026 ℞	12-Apr-2026

सातवे काक्ष्य

चंद्रमा के कक्ष से बिंदुओं की अनुपस्थिति में गुरु का गोचर संबंधित जातकों के जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में बताता है। इस स्थिति में, जातकों को धन की हानि हो सकती है, दोस्त-मित्रों के साथ संबंधों में मनमुटाव या विरोध का सामना करना पड़ सकता है और इसकी वजह से रिश्तों में दरार भी पड़ सकती है। इसके अतिरिक्त, जातकों को क्रोध और मानसिक अशांति का अनुभव, भावनात्मक विछोह का सामना करना पड़ सकता है और यह सब व्यवधान को बढाने का कारण बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, दुखदाई समय और कठिनाइयों की वजह से मानसिक संतुलन को बनाए रखने में भी दिक्कतें आ सकती हैं। इसके अलावा, जीवन में ऐसे भी मसले देखने को मिल सकते हैं जिसमें किसी सामान्य व्यक्ति की राय या उसके कार्य-कलाप की वजह से जातकों की संपत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और यह सब उसके तनाव और अनिश्चिंतता को बढाने का कारण बन सकता है।

चंद्र के सातवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
25-Aug-2025	16-Sep-2025
07-Jan-2026 ℞	07-Feb-2026
12-Apr-2026	11-May-2026

आठवे काक्ष्य

यह जो पारगमन है बृहस्पति/गुरु का लग्न के कक्ष्या माध्यम से वह व्यक्तियों के लिए विशिष्ट चुनौतियाँ लेकर आता है। इस पारगमन के दौरान हो सकता है जातक पाखण्ड की ओर प्रवृत्ति दिखाएँ, जहाँ एक व्यक्ति की क्रियाएं उनके विश्वास या मूल्यों के साथ संरेखित नहीं होती हैं, जिस के चलते आंतरिक संघर्ष होता है। इसके अलावा, ऐसे उदाहरण भी हो सकती है जहाँ व्यक्तियाँ न चाहते हुए भी खुद के पतन में योगदान दे, वो भी शायद अपने पथभ्रष्ट कामों या फैसलों के माध्यम से। जो हो सकता है खेद या आत्म-दोष की भावना में परिणामित हो।

इसके सिवाय, बदनामी का अनुभव कर सकते हैं जो एक के प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाये और भावनात्मक तनाव का कारण बने। दोस्ती के अन्तर्गत आने वाली संघर्ष या धोखेभाज़ी भी शोक उत्पन्न कर सकता है, जो भावनात्मक बोझ को बढ़ाये। इसके अलावा, ऐसे घटनाएं होते हैं जहाँ भरोसा तोड़ा जाता हैं, जैसे दोस्तों द्वारा किए गए कार्यों के कारण धन या संसाधन के विनाश के ओर ले जा ये।

लग्न के आठवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
16-Sep-2025	18-Oct-2025
05-Dec-2025 ℞	07-Jan-2026
11-May-2026	02-Jun-2026

बृहस्पति कर्क राशि में।

गुरु की भिन्नष्टकवर्ग में, कर्क राशि को शनि से एक बिंदु प्राप्त हो रहा है।

पांच बिंदुओं वाली राशि से होने वाले स्थानांतरण के दौरान, जातकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सकते हैं। इस अवधि के दौरान, जातक अपने दुश्मनों पर विजय की आशा कर सकते हैं। यह अवधि आमतौर पर लाल रंग की वस्तुओं की ग्राह्यता से संबंधित है जो उत्साह, सज्जनता और साहस का प्रतीक है। इसके अलावा, यह समय कुछ सार्थक मित्र बनाने और इन रिश्तों से पर्याप्त लाभ अर्जित करने का है। इस स्थानांतरण के दौरान अपने विश्वसनीय मित्रों के साथ संपर्क बनाने पर ज़ोर दिया जाता है। साथ ही, यह स्थानांतरण उपलब्धि और समृद्धि सुनिश्चित करते हुए कानूनी मामलों में अनुकूल परिणाम के साथ-साथ विभिन्न कार्यों में सफ़लता की ओर संकेत करता है।

पहले काक्ष्य

बिंदुओं की उपस्थिति के कारण शनि के कक्ष से होने वाला बृहस्पति का स्थानांतरण सकारात्मक होगा। जातक बड़ी उपलब्धियों के लिए सामर्थ्य का प्रदर्शन करेंगे और अपने जीवन में पूर्णता का अनुभव करेंगे। वे अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रयासों में सफ़लता अर्जित कर सकेंगे जिससे उन्हें अपार सुख और संतोष का अनुभव होगा। जातक साहित्य में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह स्थानांतरण संभव है कुछ अनुकूल परिस्थितियां और अवसर लाएगा जो जातकों के लिए उनकी शक्तियां और क्षमता प्रदर्शित करने का भी अवसर होगा। यह वह समय है जब ज़मीन खरीदना उचित होगा साथ ही कर्मचारियों के प्रयासों से लाभ अर्जित होगा। समग्र रूप में, ऐसा लगता है कि यह स्थानांतरण विशेष रूप से पक्के इरादे और कठिन परिश्रम के कारण सकारात्मकता और विकास की अवधि हो सकती है।

शनि के पहले कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
18-Oct-2025	05-Dec-2025

गुरू नक्षत्र में गोचर

12 राशियाँ 27 नक्षत्रों के सम्मिश्रण से बनी हैं। जब कोई ग्रह किसी राशि से होकर गुजरता है, तो वह लगभग ढाई नक्षत्रों से होकर गुजरता है। नीचे इन नक्षत्रों से बृहस्पति के पारगमन की भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ प्रस्तुत हैं:

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गुरू भरणी नक्षत्र में गोचर

गुरू का भरणी नक्षत्र में गोचर, जो मंगल द्वारा शासित है, जो मीन के बारहवे भाव में स्थित है। दैवानुकूल तारा होने के कारण, भरणी अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का भरणी नक्षत्र में April 10, 2025 से June 13, 2025 तक गोचर

गुरू चित्रा नक्षत्र में गोचर

गुरू का चित्रा नक्षत्र में गोचर, जो राहु द्वारा शासित है, जो वृषभ के दूसरे भाव में स्थित है। वध तारा होने के कारण, चित्रा बुरा प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का चित्रा नक्षत्र में June 13, 2025 से August 13, 2025 तक गोचर

गुरू धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो मिथुन के तीसरे भाव में स्थित है। मित्र तारा होने के कारण, धनिष्ठा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में August 13, 2025 से June 18, 2026 तक गोचर

व्याख्या

यह गोचर संबंधित जातकों के लिए व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास के कई अवसर लेकर आता है। इन जातकों को, आर्थिक लाभ, व्यापक प्रसार एवं व्यापक पहचान आदि के मामले में लाभ प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरक्त, संबंधित जातक अपने कार्यस्थल पर और व्यावसायिक उपक्रम दोनों ही स्थलों पर मील का पत्थर साबित हो सकता है और वह मनवांछित उद्देश्य प्राप्त कर सकता है।

इस स्थानांतरण के दौरान जातकों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक उन्नति के लिए सीमित अवसर प्राप्त होंगे। उन्हें कम होते संपर्क और अपर्याप्त मान्यता के साथ वित्तीय लाभ में कुछ असफ़लताएं हाथ लग सकती हैं। इसके अलावा, जातकों को अपने कार्यक्षेत्र और व्यावसायिक गतिविधियों में लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने में संघर्ष भी करना पड़ सकता है।

बृहस्पति कर्क राशि में।

गुरू धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो मिथुन के तीसरे भाव में स्थित है। मित्र तारा होने के कारण, धनिष्ठा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में August 13, 2025 से June 18, 2026 तक गोचर

व्याख्या

यह गोचर संबंधित जातकों के लिए व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास के कई अवसर लेकर आता है। इन जातकों को, आर्थिक लाभ, व्यापक प्रसार एवं व्यापक पहचान आदि के मामले में लाभ प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरक्त, संबंधित जातक अपने कार्यस्थल पर और व्यावसायिक उपक्रम दोनों ही स्थलों पर मील का पत्थर साबित हो सकता है और वह मनवांछित उद्देश्य प्राप्त कर सकता है।

सूर्य और चंद्र के लिए वेध

मिथुन राशि के गोचर में गोचर वेध

जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहते हैं। नीचे वे समय दिए गए हैं जब बृहस्पति के गोचर की अवधि के दौरान सूर्य और चंद्रमा विप्रीत वेध बनाते हैं। इन समयों के दौरान, बृहस्पति के हानिकारक प्रभाव कम हो जाएँगे।

सूर्य का विप्रीत वेध लगभग 30 दिनों तक चलता है। नीचे विशिष्ट अवधियाँ दी गई हैं।

शुरुआत	समापन
Jul 16, 2025	Aug 17, 2025

चंद्रमा का विप्रीत वेध आमतौर पर लगभग 2 दिनों तक चलता है। अवधि नीचे दी गई तालिका में सूचीबद्ध हैं।

शुरुआत	समापन
May 30, 2025	Jun 01, 2025
Jun 27, 2025	Jun 29, 2025
Jul 24, 2025	Jul 26, 2025
Aug 20, 2025	Aug 23, 2025
Sep 17, 2025	Sep 19, 2025
Oct 14, 2025	Oct 16, 2025

कर्क राशि के गोचर में विपरीत वेध

जब गोचर ग्रह के सकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं। नीचे वे समय दिए गए हैं जब बृहस्पति के गोचर की अवधि के दौरान सूर्य और चंद्रमा गोचर वेध बनाते हैं। इन अवधियों के दौरान, बृहस्पति से जुड़े सकारात्मक परिणाम समाप्त हो जाएँगे

चंद्रमा का गोचर वेध आमतौर पर लगभग 2 दिनों तक चलता है। अवधि नीचे दी गई तालिका में सूचीबद्ध हैं।

शुरुआत	समापन
Nov 08, 2025	Nov 10, 2025

Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, Brand cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. Brand assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by Brand should be taken strictly as guidelines and suggestions.

Prokerala

www.prokerala.com

1800 425 0053

support@prokerala.com